सम्राट अशोक के अभिलेख

विपश्यना विशोधन विन्यास

सम्राट अशोक के अभिलेख

विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी

"मुनिसानं चु या इयं धंमवढि वढिता दुवेहि येव
आकालेहि धंमनियमेन च निझतिया च
"तत चु लहु से धंमनियमे निझतिया व भुये"।

[मनुष्यों में जो धर्म की बढ़ोतरी हुई है वह दो प्रकार से हुई है - धर्म के नियमों से और (विपश्यना) ध्यान करने से।

और इनमें धर्म के नियमों से कम और (विपश्यना) ध्यान करने से कहीं अधिक (हुई है।)]

– स्तंभ देहली-टोपरा : सप्तम अभिलेख

सम्राट अशोक : संक्षिप्त परिचय

भारतवर्ष के लिए यह अत्यंत गौरव की बात है कि उसकी धरती पर जन्मे सम्राट अशोक का नाम केवल भारत ही नहीं, बल्कि विश्वभर में, बहुत ही आदर के साथ लिया जाता है। ब्रिटेन के सुप्रसिद्ध लेखक एच. जी. वेल्स ने अशोक की गणना विश्व इतिहास के छः महानतम व्यक्तियों में की है। यूनेस्को कलिंग प्राईज १९८५ के लारिएट सर एग्गरमोंट ने इसके बारे में अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा: 'अशोक को आज विश्व का सम्राट होना चाहिए था।' इसी विभूति का संक्षिप्त परिचय नीचे की चंद पंक्तियों में दिया जा रहा है।

अशोक के जीवन के बारे में मुख्य-मुख्य जानकारी निम्न स्रोतों से मिलती है -

१. दिव्यावदान (असोकावदान) २. दीपवंस ३. महावंस ४. पुराण ५. सम्राट अशोक के शिलाओं तथा स्तंभों पर उत्कीर्ण अभिलेख

सम्राट के प्रारंभिक जीवन के बारे में अनेक दंतकथाएं भी प्रचलित हैं पर इनमें से कितनी ही निःसार प्रतीत होती हैं। इनमें से कुछ तो भारतीय मूल की हैं और शेष अधिकतर श्रीलंका से प्रसरित हुई हैं। एक कथा के अनुसार अशोक पहले बड़े चंड स्वभाव का था, पर बाद में भगवान बुद्ध की शिक्षा को अपनाने से बड़ा धार्मिक व्यक्ति बन गया। इस प्रकार वह 'चंडाशोक' से 'धम्माशोक' बन गया।

सम्राट के जीवन के घटनाक्रम के बारे में विद्वानों में मतैक्य नहीं है। फिर भी प्रायःकर वे सभी इसका प्रामाणिक स्रोत उन अभिलेखों को तो मानते ही हैं जिन्हें अशोक ने अपने शासनकाल में समय समय पर अपने विशाल साम्राज्य में महत्त्वपूर्ण स्थानों पर शिलाओं तथा स्तंभों पर उत्कीर्ण करवाया था। स्वर्गीय श्री रवींद्रनाथ टैगोर का भी चिंतन है कि सम्राट अशोक ने चट्टानों पर लेख इसीलिए खुदवाये कि वह जो आवाज इनमें भरे वही आवाज सदियों तक लोगों के श्रवणगोचर होती रहे। इन अभिलेखों को पढ़ते समय बहुत बार सचमुच ऐसे लगने लगता है मानों अशोक स्वयं अपनी धर्मलिपि पढ़ कर हमें सुना रहा हो।

अशोक मौर्य वंश का तीसरा बड़ा सम्राट था। चंद्रगुप्त इसके पितामह और बिंदुसार इसके पिता थे। शासन की बागडोर संभालने से पहले अपने पिता के

जीवनकाल में यह अवन्ति नाम के जनपद का प्रशासक रह चुका था जिसकी राजधानी उज्जयिनी (उज्जैन) थी। उस समय यह अठारह वर्ष का ही था। इस प्रकार बाल्यकाल से ही इसे प्रशासन का अच्छा-खासा अनुभव हो गया था जो बाद में इसके लिए बड़ा उपयोगी सिद्ध हुआ।

अशोक का जन्म ईसापूर्व ३०४ में हुआ था। मास्की में पाये गये अभिलेख से इसका नाम 'असोक' होना विदित होता है, अन्यथा अन्य अभिलेखों में इसे 'देवानंपिय' अथवा 'पियदस्सी राजा' कहा गया है। ये दोनों अशोक के नाम न होकर उसकी मानोपाधियां थीं, जैसे आजकल 'His Majesty'।

अशोक की पहली पत्नी का नाम देवी था जिससे इसे पुत्र महेंद्र और पुत्री संघमित्रा संतान के रूप में प्राप्त हुए। दूसरी पत्नी कारुवाकी से इसे तीवर नाम का पुत्र प्राप्त हुआ। असंधिमित्रा इसकी अग्रमहिषी मानी जाती है। दिव्यावदान के अनुसार धर्मविवर्धन (कुणाल) नाम का पुत्र पद्मावती की कोख से हुआ था। एक अभिलेख में अशोक के पौत्र दशरथ का नाम आता है जिसने अशोक की मृत्यु के उपरांत राजपाट भी संभाला था। महेंद्र और संघमित्रा भगवान बुद्ध की शिक्षा का प्रसार करने के उद्देश्य से श्रीलंका देश में चले गये थे।

यदि श्रीलंका के इतिवृत्तों पर विश्वास किया जाय तो यह मानना होगा कि अशोक के सिंहासन पाने और उसका राज्याभिषेक होने के बीच चार वर्षों का अंतराल रहा। इसके लिए एक तर्क यह दिया जाता है कि उसे उत्तराधिकार के लिए युद्ध में जूझते रहना पड़ा। उसका राजतिलक ईसापूर्व २७० में हुआ था।

अशोक को विरासत में इतना बड़ा साम्राज्य मिला जो आज के भारत से कहीं विशाल था। उसके राज्य की सीमाएं वर्तमान अफगानिस्तान से मैसूर तक फैली हुई थीं और उत्तर में नेपाल भी उसके राज्य तले था। उसने अपने जीवनकाल में एक ही युद्ध लड़ा जिसे कलिंग का युद्ध कहते हैं। यह राज्याभिषेक के नौवें वर्ष में लड़ा गया। इसमें एक लाख लोग कत्ल हुए, डेढ़ लाख लोगों को बंदी बनाया गया और इससे भी ज्यादा लोग मारे गये। लगभग चार लाख लोग घायल हुए। इस नर-संहार और अपार क्षति से अशोक का दिल दहल गया। वह संतापित हो उठा और इसके पश्चात्ताप के तौर पर उसने भविष्य में कोई युद्ध न लड़ने की अटल प्रतिज्ञा की और आगे के लिए अहिंसा और धार्मिक सहिष्णुता को अपने जीवन का मूलमंत्र बना लिया। अशोक ने

अहिंसा की प्रतिज्ञा वर्तमान उड़ीसा की राजधानी भुवनेश्वर के पास धौली नामक स्थान पर ली थी। वहां पर आजकल एक शांति-स्तूप भी बना हुआ है।

अशोक ने धार्मिक गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए एक सरकारी विभाग बनाया जिसके अंतर्गत 'धर्ममहामात्र' नियुक्त किये गये। इनके जिम्मे बहुत महत्त्व के काम सौंपे गये। इनकी विस्तृत जानकारी अशोक के संबंधित अभिलेखों को पढ़ने से होगी। इस कार्य में महिलाओं को भी भूमिका अदा करने के लिए दी गयी थी। इन्हें स्त्र्यध्यक्ष महामात्र कहते थे। जन जन का कल्याण करने वाले इस प्रकार के पद का सृजन विश्व के इतिहास में प्रथम वार सम्राट अशोक ने ही किया था।

ईसापूर्व २६० तक अशोक की बुद्ध के प्रति श्रद्धा अगाध हो चुकी थी, अतः वह पहली बार धर्मयात्रा पर निकला। उसके बाद उसने अनेक धर्मयात्राएं कीं जिनका उल्लेख जनश्रुतियों तथा अभिलेखों में पाया जाता है। मथुरा-निवासी उपगुप्त अशोक का आचार्य था। उसके नेतृत्व में अशोक ने एक विशाल सेना के साथ बौद्ध तीर्थों की यात्रा की थी। मुख्य स्थान थे भगवान की जन्मस्थली लुंबिनी, महाभिनिष्क्रमण का स्थान कपिलवस्तु, संबोधि प्राप्त करने का स्थान बोधगया, धर्मचक्रप्रवर्तन करने का स्थान इसिपतन (सारनाथ), महापरिनिर्वाण प्राप्त करने का स्थान कुशीनगर। कतिपय अन्य स्थानों की यात्रा किया जाना भी पाया जाता है। अशोक ने यह भी स्पष्ट किया है कि आखिर इन धर्मयात्राओं का प्रयोजन क्या था। इसके लिए कृपया देखें गिरनार शिला का अष्टम अभिलेख।

अशोक ने अपने शासनकाल में पाटलिपुत्र में एक धर्म-संगीति भी बुलाई थी जो बड़े ऐतिहासिक महत्त्व की थी। भगवान बुद्ध के महापरिनिर्वाण के पश्चात यह तीसरी संगीति थी जो ईसापूर्व २५१ में संपन्न हुई। इसकी अध्यक्षता आचार्य मोग्गलिपुत्त तिस्स ने की थी। इस संगीति के उपरांत विदेशों में धर्मप्रसार के उद्देश्य से अनेक स्थविरों को भेजा गया जिसके फलस्वरूप ही

आज के एशियाई देशों में बुद्ध की शिक्षा में विश्वास रखने वाले लोग बहुत बड़ी संख्या में मिलते हैं।

किस देश में किस स्थविर को भेजा गया, इसकी तालिका नीचे दी गयी है -

स्थविर	**देश**
१. मज्झन्तिक	काश्मीर एवं गंधार
२. महारक्षित	यवन (यूनान)
३. मज्झिम	हिमालय देश
४. धर्मरक्षित	अपरांतक
५. महाधर्मरक्षित	महाराष्ट्र
६. महादेव	महिषमंडल (मेसूर या मांधाता)
७. रक्षित	वनवासी (उत्तर कन्नड)
८. सोण वा उत्तर	सुवर्णभूमि (पेगू तथा मौलमीन)
९. महेंद्र	श्रीलंका (सिंहल)

जनसाधारण के लिए अशोक ने बहुत से कल्याणकारी कदम उठाये। उदाहरणस्वरूप, उसने पथिकों के लिए रास्तों पर घने छायादार पेड़ लगवाये जिनके नीचे मनुष्य एवं पशु विश्राम कर सकें। थोड़ी-थोड़ी दूरी पर पानी पीने के कुएं खुदवाये। मार्गों पर यात्रियों के ठहरने के लिए धर्मशालाएं निर्मित करवायीं। औषधि के काम आने वाली पेड़-पौधों की नर्सरियां बनवायीं। अस्पताल खुलवाये। दवाइयों का प्रबंध करवाया। पशुओं की चिकित्सा के लिए भी अस्पताल खुलवाये। राजकीय शिकार पर रोक लगायी। अन्यथा भी पशुओं के वध को प्रतिबंधित किया। किन्हीं विशेष अवसरों पर विशेष जानवरों के वध पर रोक लगायी।

सम्राट अशोक के अभिलेखों से अनेक प्रकार के संदेश मिलते हैं:

नैतिकता को बढ़ावा देने से संबंधित, जैसे अहिंसा को प्रश्रय देना, चरित्र-निर्माण, सहिष्णुता, दूसरों के विचारों का सम्मान, माता-पिता का

सम्मान, अपने आचार्य, मित्र, संबंधी, धर्मगुरु का सम्मान, दासों तथा भृत्यों के प्रति सम्मान, सच बोलना, इत्यादि।

आज का भारत भी सम्राट अशोक को इस रूप में अपनी श्रद्धांजलि अर्पित कर रहा है कि उसने अपना राष्ट्रीय चिह्न अशोक द्वारा निर्मित एक स्तंभविशेष के शीर्षभाग को बनाया है। यह स्तंभ वाराणसी के निकट सारनाथ में किये गये उत्खनन के परिणामस्वरूप प्राप्त हुआ था। अभी यह सारनाथ ही के संग्रहालय में रखा हुआ है। स्तंभ की विशेषताएं इस प्रकार हैं;

- ऊंचाई लगभग पचास फीट
- पाषाण के एकल खंड से निर्मित
- इसकी पालिश २,३०० वर्ष के बाद आज भी वैसी ही चमकदार
- इसके ऊपर की गयी कारीगरी उस समय की उत्कृष्ट कलाकृति की एक बेजोड़ मिसाल
- इसके शीर्ष भाग पर चार सिंहों का एक दूसरे के साथ पीठ सटाये बैठे होना
- सिंहों के नीचे हाथी, बैल और घोड़ा - इन तीनों की विद्यमानता
- हाथी, बैल और घोड़े के बीचोंबीच एक 'धर्मचक्र' का अंकन

[यह 'धर्मचक्र' भगवान बुद्ध द्वारा प्रज्ञप्त उन चौबीस प्रत्ययों का सूचक प्रतीत होता है जिनसे यह सृष्टि का व्यापार चलता है।]

सम्राट अशोक की प्रसिद्धि जिन कारणों से है, वे हैं:

- कुशलतम प्रशासन
- नगरों का निर्माण
- बहुत बड़ी संख्या में विहारों, स्तंभों एवं स्तूपों का निर्माण
- प्रस्तर शिलाओं और स्तंभों पर प्रजाजन एवं अधिकारीवर्ग के निमित्त अपने आदेशों, अनुदेशों, अपेक्षाओं का उत्कीर्णन
- पत्थरों पर कलाकारी
- समाज सेवा के कार्य
- लोगों में 'विपश्यना ध्यान' की प्रवृत्ति जगाना

यह ज्ञातव्य है कि अशोक ने अत्यल्प काल में ही अपने साम्राज्य में यत्र तत्र ८४,००० स्मारक खड़े करवा दिये थे। यह मान्यता है कि भगवान बुद्ध एवं उनके प्रमुख शिष्यों के उपदेशों की संख्या इतनी ही होने के कारण उसके द्वारा ८४,००० स्मारकों का निर्माण-कार्य हाथ में लिया गया था।

सम्राट अशोक द्वारा शिलाओं, स्तंभों, गुफाओं पर उत्कीर्ण अभिलेखों की संख्या ४२ तक पहुँच चुकी है। इनमें से ३६ भारत में, २ नेपाल में, २ पाकिस्तान में और २ अफगानिस्तान में हैं। अफगानिस्तान में पाये गये अभिलेख 'खरोष्ठी' लिपि में हैं। इन सभी अभिलेखों को ऐसे स्थानों पर उत्कीर्ण किया गया था जहां पर अधिक-से-अधिक लोगों का ध्यान इनकी ओर आकृष्ट हो सके। विद्वानों ने अभिलेखों का वर्गीकरण निम्न प्रकार से किया है:

- शिला अभिलेख (गिरनार, कालसी, मानसेहरा, धौली, जौगड़, इत्यादि)
- लघुशिला अभिलेख (रूपनाथ, सहसराम, बैराठ, ब्रह्मगिरि, इत्यादि)
- स्तंभ अभिलेख (टोपरा, देहली-मेरठ, कौसांबी, इत्यादि)
- लघुस्तंभ अभिलेख (सांची, सारनाथ, रुम्मिनदेई, इत्यादि)
- गुहा अभिलेख (बराबर)

सम्राट अशोक के शिलाओं, स्तंभों, इत्यादि पर खुदे हुए अभिलेख अधिकतर 'ब्राह्मी' लिपि में हैं जो आजकल प्रचलित देवनागरी लिपि की जननी है। इनकी भाषा मुख्यतया 'पालि' है जो उस समय उत्तर भारत में बोलचाल की भाषा थी। उस समय की पालि के तीन भेद मिलते हैं जो इस प्रकार हैं: १. पंजाबी, २. उज्जेनी, तथा ३. मागधी।

इन अभिलेखों की खोज से पहले लोग अशोक को भूल चुके थे। इन अभिलेखों के कारण ही उनका अस्तित्व प्रकाश में आया है। अभिलेखों की खोज और उन पर अनुसंधान करने का कार्य प्रायःकर विदेशी विद्वानों के कारण ही संभव हो पाया है। फादर टीफेनथालर ने देहली-मेरठ स्तंभ अभिलेख की खोज सन १७५० ईस्वी में की थी। इसके अर्थ को जेम्स प्रिंसेप ने सन १८३७ ई० में सुनिश्चित किया था। इसके बाद तो बहुत से विद्वान समय समय पर इस कार्य में जुटते चले गये। इनमें से कुछेक नाम इस प्रकार हैं: ए. कनिंघम, एमिल सेना, ई. हार्डी, जार्ज ब्यूलर, ई. हुल्ज, विंसेंट स्मिथ, ए.सी.वूलनर, एच. कर्न, एग्गरमोंट, इत्यादि। भारतीय विद्वानों ने भी इस कार्य

में काफी योगदान दिया है। कुछ प्रसिद्ध नाम हैं: डी.आर. भांडारकर, डी.सी. सरकार, राधाकुमुद मुखर्जी, बी.सी. लाहा, बी.एम. बरुआ, ए.सी. सेन, आर.जी. बसाक, सी.एस. उपासक, राजबली पांडे, इत्यादि।

पूर्व में उल्लेख किया जा चुका है कि भारत और उससे बाहर के देशों में सम्राट अशोक के अभी तक ४२ अभिलेख खोजे जा चुके हैं। इस अभिलेखों में सम्राट के जो अनुदेश अंकित हैं उनकी जानकारी हर किसी को होना नितांत आवश्यक है। इसी उद्देश्य से इस पुस्तिका को प्रकाश में लाया गया है।

अभिलेखों को उत्कीर्ण करने के प्रयोजन से काम में लिए गये अनेक शिलाखंड अथवा स्तंभ क्षतिग्रस्त हो जाने से उन्हें भाषानुवाद हेतु नहीं चुना गया है। अधिकतर उन्हीं अभिलेखों का चयन किया गया है जो स्पष्ट रूप से पढ़ने में आते हैं। इनके मात्र एक-दो अपवाद अवश्य हैं। किसी भी अभिलेख को छोड़ा नहीं गया है। इस प्रकार सम्राट अशोक द्वारा जो कुछ प्रज्ञप्त किया गया है उसे पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है। अभिलेखों का रूपांतरण सरल भाषा में किया गया है जिससे सर्वसाधारण की समझ में आ जाय। अत्यावश्यक होने पर ही किन्हीं किन्हीं संदर्भों की संक्षिप्त व्याख्या की गयी है।

निदेशक
विपश्यना विशोधन विन्यास